

ZUME सत्र 2 का वीडियो स्क्रिप्ट्स

निर्माता विरुद्ध ग्राहक

इस सत्र में, हम इस बारे में बात करेंगे कि हम यीशु के अनुनायी को एक परमेश्वर के राज्य में सिर्फ उपयोग करने वाला बनने के बजाय उत्पन्न करनेवाला भी कैसे बना सकते हैं।

उनकी सिद्ध योजना में, परमेश्वर ने हमें संतुलन में रहने के लिए रचा है –उत्पन्न करने और उपयोग करने के लिए, बनाने और इस्तेमाल किये जाने के लिए, उंडेलने और भरने के लिए, ताकि हम फिर से उंडेल सकें।

लेकिन हमारी टूटी हुई दुनिया में, लोगों ने परमेश्वर की योजना को नकारा है और कई लोगों ने अपनी शक्ति परमेश्वर के सिद्ध सूत्र में जीने के भाग के रूप में व्यर्थ कर दी है।

उन्होंने इसे सीखा लेकिन बांटा नहीं। वे भरे हुए हैं लेकिन उन्होंने कभी उंडेला नहीं। वे उपयोग करते हैं लेकिन उत्पन्न नहीं करते।

यदि हम ऐसे शिष्य बनाएं जो बढ़ते जाएं, तो हमें उन्हें यह बताने की जरूरत है कि वे उत्पन्न करनेवाले कैसे बन सकते हैं ना कि सिर्फ उपयोग करनेवाले।

यह इस प्रकार है---हमें आत्मिक रूप से बढ़ाने के लिए परमेश्वर अपने लिखित वचन का उपयोग करते हैं –जिसे हम पवित्र शास्त्र या बाइबल कहते हैं। हर एक शिष्य को सीखने, अर्थ बताने और वचन को लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिये।

हजारों सालों से भी ज्यादा और कई लेखकों के द्वारा, परमेश्वर ने अपने विश्वासयोग्य लोगों के दिलों में अपने वचन कहे हैं जिन्होंने इसे लिखा और उनके पास जो था उसे बांटा।

पवित्र शास्त्र हमें परमेश्वर की कहानी, योजना, उनके हृदय, और उनकी इच्छा के बारे में सिखाता है।

पहले के सत्र में, आपने दो सरल टूल्स सीखे –सोप्स यानि दैनिक बाइबल अध्ययन और जवाबदेही समूह। आनेवाले सत्रों में, आप एक और टूल सिखेंगे – **3/3** समूह।

ये तीनों टूल्स साथ मिलकर एक नये शिष्य को परमेश्वर के लिखित वचन को सीखने, इनका अर्थ समझने और इन्हें लागू करने में मदद करते हैं।

वे परमेश्वर के वचन को सिर्फ सुननेवाले नहीं बल्कि इसे करनेवाले और बांटनेवाले भी बनेंगे।

हमें आत्मिक रूप से बढ़ाने के लिए परमेश्वर अपने कहे गए वचन का उपयोग भी करते हैं –जिसका भेद हम प्रार्थना के द्वारा सीख सकते हैं।

प्रार्थना यानि परमेश्वर की सुनना और उनसे कहना है। प्रार्थना हमें परमेश्वर के साथ घनिष्ठता में तथा उनके हृदय, उनकी इच्छा और उनके तरीकों को समझने में मदद करती है।

प्रार्थना हमें सेविकाई में और दूसरों की सेवा करने में, खास तरीकों को सीखने में और इसे बताने में मदद करती है जो किसी व्यक्ति या समूह को परमेश्वर को बेहतर रीति से समझने में मदद करती है।

दो सरल टूल्स – प्रार्थना चलन और प्रार्थना चक्र उन शिष्यों को व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन को विकसित करने में और प्रार्थना में नये तरीकों को सीखने में मदद करता है जो दूसरों की सेवा करते हैं।

ये टूल्स निरंतर प्रार्थना करने की आदत को विकसित करने और दुनिया पर केवल नजर आने वाले कारणों पर भरोसा करने के बजाय दुनिया को आत्मिक दृष्टिकोण से देखने में मदद करते हैं।

इनका लगातार उपयोग करने से, ये यीशु के शिष्यों को प्रार्थना करने में अपनी क्षमता बढ़ाने में तथा परमेश्वर से सुनने और इसे लोगों को बताने में मदद करते हैं।

हमें आत्मिकता में बढ़ने के लिए परमेश्वर विश्वासियों की अपनी देह का इस्तेमाल करते हैं – जिसे हम चर्च या यीशु के शिष्य कहते हैं।

एकत्रित विश्वासियों के रूप में हम जुड़े हुए हैं। परमेश्वर का वचन कहता है कि यीशु में – हम एक देह के कई हिस्से हैं, और हम एक दूसरे से संबंधित हैं। दूसरे शब्दों में, हम केवल परमेश्वर से जुड़े हुए नहीं हैं – बल्कि हम एक दूसरे से भी जुड़े हुए हैं।

परमेश्वर हमें एक दूसरे के अधीन रहने के लिए कहते हैं। परमेश्वर हमें एक दूसरे की सेवा करने के लिए कहते हैं।

हममें से हर एक की ताकत अलग-अलग है और हर एक की कमजोरियाँ हैं। परमेश्वर हम से अपेक्षा करते हैं कि हम अपनी ताकत का इस्तेमाल दूसरों की मदद के लिए करें जो शायद कमजोर हैं। और वह हमसे अपेक्षा करते हैं कि हम अपनी कमजोरियों में दूसरों को उनकी ताकत का इस्तेमाल करने दें जो परमेश्वर ने उन्हें दी हैं।

परमेश्वर का वचन कहता है कि परमेश्वर ने आपको कुछ विशेष योग्यताएं दी हैं; यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे एक दूसरे की मदद करें, और उन्हें परमेश्वर की अनेक तरह की आशीषें प्रदान करें।

सरल टूल जैसे **3/3** समूह,

जवाबदेही समूह और सहकर्मी सलाह - हमें एक दूसरे से प्रेम करने और भलाई के काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं; सिर्फ उसका पालन करने के द्वारा नहीं जो परमेश्वर ने हमें करने के लिए कहा है, बल्कि दूसरों से सीखे गए तरीकों को बताने के द्वारा भी।

हमें आत्मिक रूप से बढ़ाने के लिए परमेश्वर सताव और तकलीफों का उपयोग भी करते हैं – त्याग और नुकसान का जो हम यीशु के लिए सहन करते हैं।

जब लोग हमें निराश और दुःखी करते हैं, क्योंकि हम यीशु से प्रेम करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं, और इस कारण जब हमारे साथ कुछ बुरा होता है, तो परमेश्वर उन सतावों और कष्टों का उपयोग हमारे चरित्र को शुद्ध करने और हमें ज्यादा से ज्यादा यीशु के जैसा बनाने के लिए करते हैं।

वह सेविकाई के लिए हमारे चरित्र को बनाते हैं, शुद्ध करते हैं तथा हमारे विश्वास को मजबूत करते हैं और हमें उन लोगों की सेवा करने देते हैं जो खास तौर से तकलीफ में हैं – खुद को उन लोगों पर स्पष्ट रूप से प्रकट करते हुए जो हमें देख रखे हैं और हमारे दर्द को जानते हैं।

परमेश्वर हमें बताते हैं कि यीशु के शिष्य के रूप में हमें सताव के लिए तैयार रहना चाहिये।

यीशु ने कहा है - धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब तुम आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥

3/3 समूह और जवाबदेही समूह जैसे सरल टूल यीशु के शिष्यों को उनके द्वारा अनुभव किये गए सताव और कष्टों को बताने का अवसर प्रदान करते हैं।

ये समूह आपको शिष्यों को यह सिखाने का मौका देते हैं कि परमेश्वर का वचन कहता है कि हमें कठिन समय के लिए तैयार रहना चाहिये और जब चीजें बुरी हों तब भी परमेश्वर के प्रेम पर भरोसा करते हुए किस तरह से प्रतिक्रिया करनी चाहिये।

वचन. प्रार्थना. शारीरिक जीवन. सताव और कष्ट

इन सब तरीकों से परमेश्वर हमें अपने सिद्ध पुत्र यीशु के जैसा बनाते हैं।

ये सरल टूल्स हमें उन चीजों का केवल उपयोग करनेवाला ही नहीं बनाते जिन्हें परमेश्वर ने हमें दिया है, बल्कि हमें उत्पन्न करनेवाला और बांटने वाला भी बनाते हैं।